ISSN : 2277- 4262
SJIF : 4.762
INTERNATIONAL MULTIDISCIPLINARY E-JOURNAL
An International Peer Reviewed, Refereed Journal

देवनागरी लिपि

देवनागरी लिपि के गुण, विशेषताएँ और सीमाएँ

प्रदीप सिंह सहोता

सहायक अध्यापक

एल.एल.आर.एम. कॉलेज ऑफ ऐजुकेशन

डुडीके मोगा।

लिपिः– मानव मन के भावों व विचारों की अभिव्यक्ति का साधन भाषा है। भाषा अपने मूल रूप में ध्वनि पर आश्रित है अर्थात् जब यह ध्वनि माध्यम से मुख से उच्चरित होती है तो यह मौखिक भाषा कहलाती है। मौखिक भाषा या उच्चरित भाषा को स्थायी रूप देने के लिए भाषा के लिखित रूप का विकास हुआ। प्रत्येक ध्वनि के लिए लिखित चिह्न या वर्ण बनाए गए। वर्गो की इसी व्यवस्था को "लिपि' कहा जाता है। वास्तव में लिपि ध्वनियों को लिखकर प्रस्तुत करने का ढंग है।

सभ्यता के विकास के साथ–साथ मनुष्य के लिए अपने–अपने भावों और विचारों को स्थायित्व देना, दूर–दूर स्थित लोगों में सम्पर्क बनाए रखना तथा संदेशों और समाचारों के आदान–प्रदान के लिए मौखिक भाषा से काम चला पाना असम्भव हो गया। इसीलिए लिपि का विकास हुआ। प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है। जैसे पंजाबी की लिपि गुरमुखी, अंग्रेजी की लिपि रोमन और हिन्दी की लिपि देवनागरी है। संक्षिप्त रूप में कहा जाए तो कथित विचारों एवं भावों को लिखकर प्रकट करने हेतु निर्धारित किए गए चिह्न "लिपि' कहलाते हैं।

भोलनाथ तिवारी के अनुसार– "भावों का लंकन ही लिपि है।"

देवनागरी लिपि का संक्षिप्त परिचयः– प्रत्येक भाषा की अपनी लिपि होती है जैसे हिन्दी भाषा की लिपि देवनागरी लिपि है। देवनागरी तथा अन्य भारतीय लिपियों का विकास प्रानीचतम भारतीय लिपियों से हुआ है। इस विकासक्रम को समझने के लिए ब्राह्मी लिपि के विकास क्रम को समझना आवश्यक है। प्राचीन भारत में दो लिपियाँ व्यवहार में थी– ब्राह्मी लिपि तथा खरोष्ठी। खरोष्ठी सीमित क्षेत्र की लिपि थी जबकि ब्राह्मी समूचे भारत की लिपि थी। प्राचीन नागरी लिपि के विकसित होने से ही आधुनिक नागरी या देवनागरी लिपि का विकास हुआ। नागरी लिपि से ही राजस्थानी महाजनी, गुजराती आदि लिपियाँ विकसित हुई। प्राचीन नागरी लिपि के पश्चिमी रूप से ही देवनागरी लिपि का विकास हुआ।

डा. कपिल देव द्विवेदी के अनुसारः– "वर्तमान देवनागरी लिपि का प्रारम्भ सन् 1000 से 1200 ई. तक माना गया है।"

देवनागरी लिपि की विशेषताएँः– भारत के संविधान में जब से हिन्दी को राष्ट्र भाषा घोषित किया गया तभी से देवनागरी को राष्ट्रीय लिपि का महत्वपूर्ण पद प्रदान है। यह संस्कृत भाषा की एक मात्र लिपि है। लिपियों के विशेषज्ञ एवं प्रसिद्ध विद्वान राय बहादुर गौरी शंकर हीराचन्द्र ओझा ने देवनागरी लिपि की विशेषताओं के सम्बन्ध में लिखा है, "हमारी वर्णमाला अदभुत है। जितनी बारीकी के साथ स्वरों का अभ्यास हमारी वर्णमाला को बनाने में किया गया है उतनी बारीकी और वैज्ञानिकता किसी दूसरी वर्णमाला में नहीं। जितनी प्रकार की ध्वनियाँ हैं, सबके लिए अक्षर चाहिए और एक ध्वनि के लिए एक अक्षर होना चाहिए। यह गुण इस वर्णमाला में ही है और शायद किसी दूसरी वर्णमाला में नहीं है। यह चमत्कार कुछ अनजाने में ही नहीं हो गया। उस विधा का विधिपूर्वक अभ्यास किया गया, तभी वह इतनी परिपूर्ण और सुन्दर बन सकी।"

कलकत्ता हाईकोर्ट के जस्टिस शरफुद्दीन ने कहा था कि भारत वर्ष के मुसलमानों को कुरानशरीफ भी देवनागरी लिपि में ही छपवाना चाहिए।

देवनागरी लिपि की प्रमुख विशेषताएँ निम्नलिखित हैं:–

- **देवनागरी लिपि की अन्य लिपियों से समानता:–** भारत के अधिकतम प्रान्तों में हिन्दी की लिपि ही चलती है। भारत की लगभग सभी भाषाओं की लिपियाँ देवनागरी लिपि से उपजी हैं अतः उनकी देवनागरी लिपि से पर्याप्त समानता है। इसी के कारण अन्य भाषाओं के लिए देवनागरी लिपि सीखना आसान व सुविधाजनक है। भारत के अधिकतम प्रान्तों में देवनागरी लिपि का प्रयोग किया जाता है। देवनागरी लिपि जानने वाला गुरमुखी, गुजराती, बंगाली, मराठी आदि लिपियाँ आसानी से सीख जाता है। अतः देवनागरी लिपि अपनी इस विशेषता के कारण अधिक परिचित लिपि है।

- **देवनागरी लिपि के शब्द–संयोजन की विशेषता:–** देवनागरी लिपि के अक्षर सुन्दर होने के साथ उनके शब्द संयोजन में बहुत सी ध्वनियाँ थोड़े में व्यक्त की जा सकती हैं अर्थात् वे बहुत कम स्थान लेती हैं। उदाहरणार्थ यदि रेलवे स्टेशन शब्द को अंग्रेजी भाषा की रोमन लिपि में लिखे तो उसमें चौदह अक्षर लिखने पड़ेंगे। देवनागरी लिपि को पढ़ने में समय भी कम लगता है तथा पढ़ने में गति भी तीव्र होती है।

- **देवनागरी लिपि के शब्दों के उच्चारण एवं लेखन में समानता:–** हिन्दी भाषा का वर्ण विन्यास ध्वन्यात्मक है। देवनागरी लिपि में एक निश्चित ध्वनि के लिए एक निश्चित वर्ण का प्रयोग किया जाता है। रोमन और फारसी लिपियों में इस प्रकार का कोई निश्चित नियम नहीं है। उदाहरणस्वरूप अंग्रेजी में "सी' और "के' दोनों "क' के लिए प्रयुक्त होते हैं। परन्तु हिन्दी में एक ध्वनि के लिए एक ही वर्ण है। हिन्दी भाषा में जो लिखा जाता है वही बोला जाता है।

- **मात्राओं में स्पष्टता:–** देवनागरी लिपि मात्राओं की दृष्टि से परिपूर्ण है। अन्य लिपियों की अपेक्षा हस्व व दीर्घ मात्राओं में स्पष्टता है। देवनागरी लिपि में स्वरों के स्थान पर उनकी मात्राओं का प्रयोग होता है। ये मात्राएँ व्यंजनों के साथ मिला कर लिखी जाती हैं। अंग्रेजी की रोमन लिपि में यह अन्तर स्पष्ट नहीं होता जैसे ए वर्ण "अ' और "आ' दोनों के लिए प्रयुक्त होता है।

➢ **वर्णमाला में एकरूपता व क्रमबद्धताः–** देवनागरी लिपि में शिरोरेखा के कारण एकरूपता परिलक्षित होती है। रोमन लिपि में वर्णों के छोटे बड़े रूप व आकार हैं। ऐसी भिन्नता देवनागरी लिपि में नहीं है। वर्णमाला के स्वरों में हृस्व व दीर्घ स्वर साथ–साथ हैं जिससे उनका अन्तर स्पष्ट हो जाता है। व्यंजनों को भी उच्चारण स्थान की दृष्टि से क वर्ग, च वर्ग, त वर्ग आदि वर्गों में विभाजित किया गया है। जिससे उनमें क्रमबद्धता व एकरूपता दृष्टिगोचर होती है। अतः इसके स्वर और व्यंजनों का वैज्ञानिक विभाजन है। इसमें 16 स्वर तथा 33 व्यंजन हैं। तीन संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र और ज्ञ है।

➢ **मूक अक्षरों की अपेक्षाः–** देवनागरी लिपि में ऐसे कोई अक्षर नहीं है जो लेखन में है लेकिन उच्चरित नहीं है। रोमन लिपि में ऐसे कई मूक अक्षर हैं जिनका उच्चारण नहीं होता। जैसे–HONOUR में 'H' मूक अक्षर है। 'LISTEN' में 'T' मूक है। इस तरह अनेक ऐसे शब्द हैं जो वर्तनी में हैं लेकिन उच्चारण में नहीं। देवनागरी लिपि में ऐसे शब्दों का अभाव है।

➢ **देवनागरी के अक्षरों की सुंदरताः–** कलात्मक दृष्टिकोण से देवनागरी लिपि बहुत सुन्दर एवं आकर्षक है। इसके अक्षर बहुत सुन्दर एवं सुडोल हैं। प्रत्येक अक्षर में खड़ी लकीर व प्रत्येक शब्द के ऊपर शिरोरेखा इसकी सुन्दरता को बढ़ाती है। इसके अक्षरों के रूप एवं उनके अंग समानुपाती हैं।

➢ **वर्णमाला मात्रा की दृष्टि से पूर्णः–** देवनागरी लिपि में हृस्व और दीर्घ मात्रा का स्पष्ट अन्तर है। रोमन लिपि में हृस्व और दीर्घ दोनों के लिए एक ही वर्ण प्रयुक्त किया जाता है। जैसे 'A' अ, आ के लिए 'E' इ, ई के लिए तथा 'U' उ, ऊ के लिए प्रयुक्त होते हैं। अतः देवनागरी की वर्णमाला मात्रा की दृष्टि से परिपूर्ण है।

➢ **वर्णमाला का वैज्ञानिक वर्गीकरणः–** देवनागरी लिपि में स्वरों और व्यंजनों को वैज्ञानिक ढंग से क्रमबद्ध किया गया है। इसमें 14 स्वर और 35 मूल व्यंजन हैं। तीन संयुक्त व्यंजन क्ष, त्र, ज्ञ हैं। कुछ और आवश्यक व्यंजन जैसे ड., ढ़, क़, ख़, फ़ आदि भी इस लिपि में समाहित कर लिए गए हैं।

➢ **प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग लिपि चिह्नः–** देवनागरी लिपि में लगभग प्रत्येक ध्वनि के लिए अलग लिपि चिह्न हैं। अन्य लिपियों में एक ध्वनि के लिए दो तीन लिपि चिह्न देखने को मिलते हैं। जैसे फारसी लिपि में "स' ध्वनि के लिए "सीन, स्वाद और से' तीन लिपि चिह्न मिलते हैं। रोमन लिपि में (क) ध्वनि के लिए 'k, c, ch, q' चार लिपि चिह्नों का प्रयोग होता है।

➢ **गत्यात्मक तथा व्यवहारोपयोगीः–** देवनागरी लिपि में स्वरों के स्थान पर उनकी मात्राओं का प्रयोग किया जाता है जिससे शब्दों का आकार अपेक्षाकृत छोटा हो जाता है। इस प्रकार कम समय में गति के साथ शब्द लिखने की सुविधा इसे गत्यात्मक तथा व्यवहारोपयोगी बनाती है।

➢ **प्रत्येक लिखित वर्ण का उच्चारणः–** देवनागरी लिपि में प्रत्येक लिखित वर्ण का उच्चारण किया जाता है। परन्तु रोमन लिपि में कुछ वर्ण लिखे तो जाते हैं। परन्तु उनका उच्चारण नहीं किया जाता। जैसे knife, knight में k तथा Night में gh मौन वर्ण हैं।

➢ **लेखन में सुविधाः–** देवनागरी लिपि बाईं से दाईं ओर लिखी जाती है। इस प्रकार लिखने में हाथ के संचालन में सुविधा होती है जो लेखन में सहायता प्रदान करती है।

➢ **लिपि की सुपाठ्यताः–** किसी भी लिपि में सुनिश्चित पठनीयता होनी चाहिए। डा. भोलानाथ तिवारी के अनुसार, "इस दृष्टि से देवनागरी बहुत वैज्ञानिक लिपि है। रोमन की तरह उसमें "mal' को मल, माल, मैल या Aghan को अघन, अगहन पढ़ने की परेशानी उठाने की सम्भावना ही नहीं है।"

➢ **सार्वदेशिक प्रसारः–** देवनागरी लिपि भारत की लगभग सभी लिपियों के साथ सम्बन्धित है। उत्तर भारत की सभी लिपियां दसवीं शताब्दी की देवनागरी लिपि से उपजी है। उनका देवनागरी लिपि के साथ पर्याप्त साम्य है। भारत की लगभग सभी लिपियां ब्राह्मी लिपि से विकसित हुई है। इस प्रकार देवनागरी लिपि दक्षिण की लिपियों से भी सम्बन्धित है। देवनागरी अपनी इस विशेषता के कारण राष्ट्र लिपि बनने की अधिकारिणी बनी।

➢ **अनुवाद की सहजताः—** देवनागरी लिपि समृद्ध लिपि मानी जाती है। इसमें अन्य भाषाओं के अतिरिक्त साहित्य का अधिकतम अनुवाद हुआ है क्योंकि हिन्दी अधिकतम लोगों द्वारा समझी जाती है। इस लिपि के शब्द भण्डार की विशालता ने अनुवाद के कार्य को सुगम बनाया है।

➢ **देवनागरी लिपि की शिक्षण व्यवस्था सुविधाजनकः—** देवनागरी लिपि को शिक्षण व्यवस्था में सुविधा है क्योंकि इस लिपि का ध्वनित व लिखित रूप एक है। इसके 16 स्वर तथा 33 व्यंजन हैं। प्रत्येक लिपि चिह्न एक ही ध्वनि का बोध कराता है।

➢ **स्वर का स्वतन्त्र एवं मात्रा के रूप में प्रयोगः—** देवनागरी लिपि में स्वर स्वतन्त्र एवं मात्राओं के रूप में भी व्यवहार होते हैं। ह्रस्व की मात्रा का लुप्त होकर व्यंजन में समा कर अपना कार्य करना देवनागरी की विशेषता है। जैसे "क' में ह्रस्व की मात्रा अलग नहीं है जबकि रोमन में 'K' के साथ 'A' लिखना पड़ता है।

➢ **अन्य भाषाओं को प्रस्तुत करने की क्षमताः—** देवनागरी लिपि देश की ही नहीं बल्कि विश्व की अन्य भाषाओं को भी प्रस्तुत करने की क्षमता रखती है। देवनागरी लिपि में वर्णों की बहुलता के कारण केवल संस्कृत, मराठी, हिन्दी, गुजराती, बंगला आदि भाषाओं की ही नहीं, वरन् संसार की लगभग सभी भाषाओं की ध्वनियों को सरलता तथा स्पष्टतापूर्वक अंकित किया जा सकता है।

➢ **संक्षेप में लिखने की सुविधाः—** लिपि की वैज्ञानिकता की दृष्टि से उसमें संक्षेप में लिखने की सुविधा का होना महत्वपूर्ण है। रोमन लिपि में अंग्रेजी शब्द 'MOODY' संक्षेप में लिखा नहीं जा सकता, लेकिन देवनागरी में यही शब्द संक्षेप में इस प्रकार लिखा जा सकता है मूडि। इसलिए देवनागरी लिपि एक वैज्ञानिक लिपि है।

देवनागरी लिपि की सीमाएँ

ईश्वर की न बनाई हुई कोई भी वस्तु पूर्ण नहीं कही जा सकती अतः किसी लिपि का दोष रहित होना, अनहोनी बात नहीं मानी जाएगी। यद्यपि देवनागरी लिपि विशाल, उपयोगी व समृद्ध है तथापि कुछ आलोचक इसमें निम्नलिखित सीमाओं का उल्लेख इस प्रकार करते हैंः–

- **अशुद्धियों की अधिक संभावनाः–** देवनागरी लिपि के वर्णों व मात्राओं के प्रयोग में भ्रम के कारण अशुद्धियाँ अधिक होती हैं। जिससे यह लिपि कठिन ग्राह्य लगती है। जैसे–स्वरों के प्रयोग की अशुद्धियाँ, अनुस्वार व अनुनासिक स्वर में भ्रम, विसर्ग की अशुद्धियाँ आदि इसी संदेह के कारण होती हैं।
- **नियमों की अधिकताः–** देवनागरी लिपि में नियमों की अधिकता पाई जाती है। इस लिपि के ध्वनि शब्द व वाक्य विचार में नियमों की अधिकता है। स्वर व व्यंजन के विभिन्न रूपों से शब्द रचना और वाक्य रचना तथा उनके वर्गीकरण के नियमों में बड़ी विशालता है, जिसे एक विद्यार्थी के लिए समझ पाना बहुत ही कठिन और नीरस है।
- **संयुक्त अक्षरों की कठिनताः–** दो वर्णों को मिलाकर संयुक्त अक्षर के मेल से बने संयुक्त व्यंजनों द्व, क्ष, त्र, ज्ञ के प्रयोग में प्रायः अशुद्धियाँ होती हैं। इन वर्णों से बने शब्दों को सीखना कठिन लगता है।
- **वर्णों की अधिकताः–** अन्य भाषाओं की लिपियों की अपेक्षा देवनागरी लिपि के वर्ण संख्या में अधिक है। जिन्हें समझना बहुत कठिन है और इसके शिक्षण में भी समय अधिक लगता है।
- **वर्णों की समानताः–** देवनागरी लिपि के कुछ वर्ण आपस में काफी मिलते जुलते हैं। जिससे अशुद्धियाँ होने की संभावना बढ़ जाती है। जैसे– न ण, ड ड़, ढ ढ़, र के विभिन्न रूप श स ष छ क्ष, ग्य, ज्ञ, भ ब, ध घ आदि।
- **कुछ ध्वनियों को व्यक्त करने में असमर्थताः–** देवनागरी लिपि दूसरी भाषाओं की कई ध्वनियाँ व्यक्त करने में असमर्थ है। जैसे– Education, Angle में E और A की ध्वनि Zeal में Z की ध्वनि Dog में O की ध्वनि देवनागरी लिपि में उच्चरित नहीं की जा सकती।

➢ **"र' वर्ण के रूप में विभिन्नताः–** देवनागरी लिपि में "र' वर्ण के चार रूप मिलते हैं। जैसे– करम, क्रम, कर्म, कृष्ण यानि र, ्र, र्, ृ आदि इससे भ्रम उत्पन्न होता है और इसे समझना भी कठिन होता है।

➢ **मुद्रण की असुविधाः–** देवनागरी लिपि में वर्णों की अधिकता समानता और संयुक्त अक्षरों की कठिनता आदि बहुत–सी मुश्किलें हैं। जिनके कारण इसमें मुद्रण व टाईप की असुविधा रहती है और टाईपिंग की गति भी अच्छी नहीं रहती है।

➢ **मात्राओं के प्रयोग में भ्रमः–** हिन्दी मात्राएँ कभी व्यंजनों से पहले लगती हैं तो कभी व्यंजनों के पश्चात् तो कभी ऊपर लगती है। "व्यक्ति' में ई की मात्रा "त' के साथ सम्बन्धित है परन्तु इसे त से पहले न लगाकर "क' से पहले लगा दिया गया है।

➢ **टाईप राईटर के लिए कठिनः–** देवनागरी लिपि की वर्णमाला बढ़ी होने के कारण टाईप राईटर भी बढ़ा रखना पड़ता है जिसके लिए बहुत कठिनता होती है।

➢ **लिखा कुछ और पढ़ा कुछ जाता हैः–** इस लिपि के कुछ वर्ण ऐसे हैं जिन्हें लिखा कुछ जाता है। जैसे खाना को रवाना पढ़ा जाता है।

➢ **शिरोरेखा का उचित प्रयोग नहींः–** देवनागरी लिपि में शिरोरेखा भी बड़ी गड़बड़ी डालती है। यदि भ के ऊपर शीघ्रता से शिरोरेखा पड़ जाए तो म पढ़ा जाएगा, इस तरह भरा का मरा हो जाएगा।

➢ **संयुक्त अक्षरों को सीखना कठिनः–** देवनागरी लिपि में संयुक्त अक्षरों को सीखने में कठिनाई होती है जैसे "शक्ति' को "शक्ति' रूप में भी लिखा जा सकता है।
यह विभिन्नता संयुक्त अक्षरों को सीखने में कठिनाई उत्पन्न करती है।

➢ **वर्णमाला सीखने में कठिनाईः–** देवनागरी वर्णमाला में सीधी लकीरों और गोलाईयों का प्रयोग किया जाता है। बच्चों के लिए इन्हें सीखना कठिन होता है।

➢ **चिन्हों की एकरूपता नहीः–** देवनागरी लिपि में कुछ ध्वनियाँ ऐसी हैं जिन के लिए एक से अधिक चिन्हों का प्रचार है। जैसे– "र' के लिए र्क, क्र, कृ आदि चिन्ह हैं।

➢ **अक्षरात्मकः–** इस लिपि के अक्षरात्मक होने के कारण इसका ध्वनि शास्त्रीय अध्ययन करना सर्वथा दुष्कर कार्य है। क्योंकि इसके शब्दों को पढ़कर यह पता नहीं चलता कि अमूक शब्द में कितनी ध्वनियाँ हैं।

➢ **अखिल भारतीय लिपि बनने की क्षमता नहीं:–** देवनागरी लिपि में अखिल भारतीय लिपि बनने की क्षमता नहीं है, क्योंकि इसमें द्राविड लिपियों की तरह ह्रस्व "ऍ" तथा ह्रस्व "ओ" का अभाव है।

➢ **भ्रम उत्पन्न होना:–** देवनागरी लिपि में कुछ वर्ण ऐसे हैं जो भ्रम उत्पन्न करते हैं जैसे– देवनागरी लिपि में ख, र और व लिखने का भ्रम करता है। इस दोष का निवारण करने के लिए ख के रूप में र और व को जोड़ दिया गया है।

➢ **मनचाहे रूप का प्रयोग:–** देवनागरी लिपि में अनुस्वार और अनुनासिक के चिह्न का प्रयोग भी मनचाहे रूप में किया जा रहा है। हँस और हंस का ही उदाहरण ले। हँ (हँसी) को कहते हैं जबकि हंस एक पक्षी होता है। यह गलती उच्चारण के नियमों को न समझने के कारण होती है।

➢ **एक ही प्रकार का वर्ण होना:–** ध्वनियाँ दो प्रकार की होती हैं। जबकि देवनागरी में एक ही प्रकार का वर्ण या अक्षर ध्वनि को व्यक्त करता है। जैसे– "व" ध्वनि के लिए अंग्रेजी में v और w दो ध्वनि या अक्षर हैं। पर देवनागरी में एक ही है।

➢ **दो प्रकार के अक्षर प्रचलित:–** देवनागरी लिपि में दो प्रकार के अक्षर भी प्रचलित हो गए हैं। जैसे– झ और झ आदि।

निष्कर्ष:– देवनागरी लिपि अत्यंत वैज्ञानिक, उपयोगी सरल और सुंदर लिपि है परन्तु इसमें कई दोष हैं। हमें इस लिपि के दोषों को दूर कर इस लिपि को गुणवान बनाने का प्रयास करना चाहिए। तभी यह हमारे लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

संदर्भ सूची

1 परमेश्वरन पी.एन. (1970) राष्ट्रभाषा हिन्दी का गौरव, प्रकाशन, आदर्श प्रेस, दिल्ली।

2 भाटिया, कैलाशचन्द्र, चतुर्वेदी, मौतीलाल (1686) हिन्दी भाषा विकास और स्वरूप, ग्रन्थ अकादमी प्रकाशन, नई दिल्ली।

3 खन्ना, ज्योती (2001 प्रथम संस्करण), हिन्दी भाषा शिक्षण, धनपतराय प्रकाशन, नई दिल्ली।

4 जैन, पी.सी. (2002) हिन्दी प्रयोग, एक शैक्षिक व्याकरण, वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।

5 तिवारी, डा. भोलानाथ (संस्करण 2004) राज भाषा हिन्दी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली।